इकाई 9 दक्षिण भारत में संघर्ष और विस्तार

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- 18वीं शताब्दी के दौरान दक्षिण भारत में स्थापित दो विदेशी कंपनियों, खासकर ब्रिटिश और फ्रांसीसी, की तुलनात्मक शक्ति और कमजोरियों का उल्लेख कर सकेंगे;
- देशी शक्तियों द्वारा विदेशी हस्तक्षेप या आक्रमण को रोकने की क्षमता और इच्छा शक्ति की सीमा का वर्णन कर सकेंगे;
- 1740 के बाद ब्रिटिश और फ्रांसीसी कम्पनियों के बीच संघर्ष के स्वरूप को रेखांकित कर सकेंगे; और
- इस संघर्ष को एक परिणाम तक पहुंचाने में कार्यरत आर्थिक, राजनीतिक और सैनिक तत्वों पर प्रकाश डाल सकेंगे।

9.1 प्रस्तावना

इस खंड में हम यह जानने जा रहे हैं कि किस प्रकार अंग्रेजों ने अपने आक्रमणों और युद्धों से अपनी स्थिति मज़बूत की और उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों से अपने प्रतिद्वंद्वियों को मार भगाया। इस इकाई में हम दक्षिण भारत पर अपना ध्यान केंद्रित करेंगे।

अंग्रेजों और फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कम्पनी में हुए संघर्ष के फलस्वरूप अंग्रेजों का दक्षिण में फैलाव हुआ। दक्षिण भारत फ्रांसीसी गतिविधियों का प्रमुख केंद्र था। पांडिचेरी उनकी राजधानी थी और हैदराबाद तथा मैसूर जैसे राज्यों पर उनका अच्छा खासा प्रभाव था। अधिक से अधिक मुनाफा कमाने के लिए एक व्यापारिक कम्पनी के लिए यह जरूरी हो जाता है कि वह अपने प्रतिद्वंद्वियों का सफाया कर दे और अपना एकछत्र अधिकार स्थापित करे। अतः अंग्रेजों के लिए इस क्षेत्र से फ्रांसीसियों को हटाना जरूरी था। 1761 तक अंग्रेजों को इसमें सफलता मिल भी गई। हम इस इकाई में इस प्रक्रिया का अध्ययन करेंगे।

9.2 भारत में अंग्रेज़ और फ्रांसीसियों की शक्ति और कमजोरियां

फ्रांसीसी और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी यूरोप में विकसित हो रहे व्यापारिक पूंजीवाद का प्रतिफलन थी। पूंजीवाद के

इस दौर को तैयारी का काल माना गया है, जिसमें एशिया और लैटिन अमेरिका से व्यापार कर पूंजी इकट्ठी की गई। भारत में बने माल की यूरोप में बहुत मांग थी और ये कम्पनियां भारत का माल यूरोप में बेचती थीं।

दोनों कंपनियों ने पूर्व के व्यापार से फायदा उठाया, परन्तु दोनों के फायदे में काफी अंतर था। ब्रिटिश कंपनी के पास तो बड़े जहाजी बेड़े थे; परन्तु फ्रांसीसियों के पास वाणिज्य का ज्ञान भी सीमित ही था। ब्रिटिश कंपनी के पास धन भी ज्यादा था और उसके जहाज़ शीघ्रता से आते-जाते थे। परन्तु दोनों कंपनियों की गुणवत्ता का तुलनात्मक अध्ययन करने के पूर्व उनके उद्‌भव की कहानी जानना जरूरी है। फ्रांसीसी कंपनी फ्रांसीसी राज्य संरक्षण की उपज थी, जिसका राजस्व मुख्य रूप से तंबाकू के व्यापार से आता था। तंबाकू के व्यापार पर उनकी सरकार का एकाधिकार था। दूसरी तरफ, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी एक बड़ी निजी निगम थी, जो व्यक्तिगत उद्यम पर आधारित थी और किसी भी तरह से राज्य पर निर्भर नहीं थी। वस्तुतः ब्रिटिश सरकार कंपनी की ऋणग्रस्त थी। इस प्रकार के अंतर काफी महत्वपूर्ण थे; आगे हम इनका उल्लेख करेंगे।

फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना 1664 ई. में हुई। ब्रिटिश कंपनी की स्थापना इससे पहले 1600 ई. में हो चुकी थी। 1613 ई. में बादशाह जहांगीर से उन्हें एक फरमान भी मिल गया था। इस फरमान के अनुसार, उन्हें भारत के साथ कपड़े और धागे का व्यापार करने की अनुमति दी गई। इसके अंतर्गत, उन्हें सूरत, अहमदाबाद, कैंबे तथा गोआ के पश्चिमी तटों पर व्यापार करने की अनुमति मिली। फ्रांसीसी कंपनी ने भी अपना पहला कारखाना 1668 ई. में सूरत में स्थापित किया। परन्तु इससे ब्रिटिश कंपनी को किसी गंभीर खतरे का सामना नहीं करना पड़ा। फ्रांसीसी कंपनी कम दाम की खरीद और अधिक दामों की बिक्री का रास्ता अख्तियार न कर सकी। इसके विपरीत, उन्होंने यूरोपीय सामान सस्ते में बेचा और भारतीय सामान मंहगे में खरीदा।

1669 ई. में फ्रांसीसियों ने दूसरा कारखाना मसलिपट्टनम में स्थापित किया। इसके बाद 1674 में फ्रैंक्वाइस मार्टिन ने पांडिचेरी में कारखाना खोला, जो भविष्य में भारत में फ्रांसीसियों की राजधानी बनी। यह क्षेत्र मद्रास के प्रतिद्वंद्वी क्षेत्र के रूप में सामने आया। इसकी शक्ति और आकार में वृद्धि हुई तथा यह मद्रास में स्थापित अंग्रेजी अड्डे के समतुल्य हो गया। परन्तु पांडिचेरी वाणिज्य के मामले में मद्रास से हरदम पीछे ही रहा। 1690 और 1692 के बीच पूर्व में चंदर नगर में एक कारखाना खोला गया। परन्तु इसने कलकत्ता में स्थापित अंग्रेजों के अड्डे को कभी चुनौती नहीं दी।

18वीं शताब्दी के आरंभ में फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया का सितारा गर्दिश में डूबने लगा था और सूरत, बंटम मसलिपट्टम स्थित अपने कारखानों को उन्हें छोड़ना पड़ा था। पर यह अस्थाई धक्का था और 1720 के दशक के आते-आते फ्रांसीसी कंपनी ने पुनः अपना अधिकार स्थापित किया। वस्तुतः कंपनी में फ्रांसीसी व्यापारिक बुर्जुआ वर्ग के बढ़ते स्वार्थों के कारण यह प्रयत्न किया गया। कंपनी का पुनर्गठन किया गया और इसे एक नया नाम दिया गया "परपेच्युअल कंपनी ऑफ द इंडिज़"। फ्रांसीसी नौसेना की शक्ति में काफी वृद्धि हुई और इसने मॉरीशस को अपना अड्डा बनाया। इस बात की भी सूचना मिलती है कि फ्रांसीसी कंपनी ने अपने लिए 10-12 जहाज़ों का निर्माण इंग्लैंड में कराया था। फ्रांसीसियों ने 1725 में मालाबार तट पर माहे में और 1739 में पूर्वी तट पर कारिकल में अपने पैर जमाए।

9.3 प्रथम कर्नाटक युद्ध (1740-48)

इस प्रकार दोनों शक्तियों के बीच मुठभेड़ की पृष्ठभूमि तैयार हो गई। ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार के प्रश्न पर छिड़ी लड़ाई से स्थिति पूरी तरह स्पष्ट हो गई। अंग्रेज़ और फ्रांसीसी सेना इस युद्ध में एक-दूसरे के खिलाफ लड़ रही थीं। इससे भारत में भी दोनों के बीच मुठभेड़ होने की संभावना बढ़ गई; परन्तु फ्रांसीसी इस मुठभेड़ से कतरा रहे थे।

9.3.1 कर्नाटक के नवाब की भूमिका

अंग्रेज़ों ने कर्नाटक के नवाब अनवर उद्दीन से संरक्षण और सहायता की मांग की। इस सिलसिले में नवाब ने फ्रांसीसी गवर्नर डुप्ले से मद्रास का घेरा उठा लेने का आग्रह किया। परन्तु जिस तरह पहले अंग्रेज नवाब की बात नहीं सुनते थे, उसी प्रकार अब फ्रांसीसी नवाब के आग्रह पर गंभीरता से विचार नहीं करना चाहते थे। नौसैनिक बेड़े के अभाव में नवाब उनपर दबाव डालने में भी असमर्थ था। नवाब ने फ्रांसीसियों को पाठ पढ़ाने का निश्चय किया और मद्रास को फ्रांसीसियों से मुक्त कराने के लिए अपनी सेना भेजी। नवाब की सेना काफी बड़ी थी, फिर भी उसे हार का सामना करना पड़ा। इस लड़ाई से यूरोपवासियों के सामने एक बात स्पष्ट हो गई कि छोटी-सी अनुशासित यूरोपीय सेना भी काफी बड़ी भारतीय सेना को आसानी से हरा सकती है। यह ज्ञान उनके लिए लाभदायक रहा। इससे भविष्य में उन्हें देशी राजाओं से निपटने में सुविधा हुई।

9.3.2 फ्रांसीसी एडमिरल द्वारा डुप्ले को चुनौती

पहली बार मद्रास पर फ्रांसीसियों के अधिकार स्थापित करने में एडमिरल ला बॉरडाउनेअर्स के सैनिक बेड़े का बड़ा हाथ था। यह बेड़ा मॉरिशस से आया था। इस बार एडमिरल ने डुप्ले के साथ सहयोग करने से इंकार कर दिया, क्योंकि उसका मानना था कि वह सीधे फ्रांसीसी सरकार के अधीन है और डुप्ले की आज्ञा मानना उसके लिए जरूरी नहीं है। उसने फ्रांसीसी गवर्नर डुप्ले से परामर्श किए बिना अंग्रेज़ों से एक संधि कर ली, जिसके अनुसार 4,00,000

पाउंड की रकम लेकर मद्रास अंग्रेज़ों को लौटा दिया जाएगा। डुप्ले किसी भी कीमत पर मद्रास का कब्जा नहीं छोड़ना चाहता था। ला बॉरडाउनेअर्स भारत में अपने काम को पूरा कर मॉरिशस लौट गया। अब डुप्ले कोई कदम उठाने के लिए स्वतंत्र हो गया। उसने सितम्बर, 1746 में मद्रास पर पुनः आक्रमण किया और पहली बार की तरह इस बार भी आसानी से कब्जा जमा लिया। अंग्रेज़ कैदियों को पांडिचेरी ले जाया गया और वहां उन्हें बंदी बनाकर रखा गया।

इस विजय के बाद फ्रांसीसियों ने सेंट डेविड किले पर आक्रमण किया। यह पांडिचेरी के दक्षिण में स्थित था और अंग्रेज़ों के नियंत्रण में था। परन्तु इस बार अपने अड्डे की सुरक्षा के लिए अंग्रेज़ अधिक सचेत और तैयार थे। उन्होंने अपने बेड़े को पांडिचेरी के तट से अलग जमाया और इस प्रकार फ्रांसीसी आक्रमण का डटकर मुकाबला किया। सेंट डेविड किले पर 18 महीने तक फ्रांसीसियों का कब्जा बना रहा। यह कब्जा 1848 ई. में यूरोप में हुई एक्स-ला-चैपेल की संधि के बाद ही समाप्त हो सका। अंग्रेज़ों को उनका अधिकार वापस कर दिया गया। उत्तरी अमेरिका में फ्रांसीसियों का अधिकार जिन इलाकों पर था, वे इलाके भी अंग्रेज़ों को लौटा दिए गए।

9.3.3 प्रथम कर्नाटक युद्ध में फ्रांस की बेहतर स्थिति

नौसेना के मोर्चे पर कमज़ोर होने के बावजूद प्रथम कर्नाटक युद्ध में फ्रांसीसियों की स्थिति मज़बूत बनी रही। अगर डुप्ले और ला बॉरडाउनेअर्स के बीच मन-मुटाव न हुआ होता तो भारत से अंग्रेज़ों का डंडा उखड़ जाता। परन्तु ब्रिटिश सरकारी इतिहासकार पी.ई. राबर्ट्स का मानना है कि यह स्थिति को बढ़ा-चढ़ाकर चित्रित करने का प्रयास है। उसके अनुसार, इस युद्ध से केवल कोरोमंडल तट पर स्थित इंग्लिश प्रेसिडेंसी को धक्का पहुंचा था और यह सबसे कमज़ोर प्रेसिडेंसी थी।

फ्रांसीसी सैन्य शक्ति का अभास न केवल अंग्रेज़ों को हो गया, बल्कि भारतीय शक्तियां भी इससे परिचित हो गईं। भारतीय शक्तियों का समुद्री युद्ध में कोई दखल नहीं था, अतः भारत में हुए यूरोपीय संघर्ष में उनकी कोई भूमिका नहीं हो सकती थी। यहां तक कि उनकी विशाल थल सेना यूरोपीय सेना का सामना नहीं कर.पा रही थीं। मुगल साम्राज्य के उत्कर्ष के दिनों में भारतीय राजा केंद्र से सहायता की आशा कर सकते थे, परन्तु केन्द्र में मुगल साम्राज्य के पतन के बाद सहायता का वह रास्ता भी बंद हो गया।

प्रथम कर्नाटक युद्ध से डुप्ले के सामने कुछ चीजें स्पष्ट हुईं। वह समझ गया था कि दो देशी राजाओं के युद्ध में उसकी सेना अच्छी भूमिका निभा सकती है। राजनीतिक अव्यवस्था और अस्थिरता के उस परिवेश में अनेक देशी राजा डुप्ले के समर्थन के लिए लालायित थे।

बोध प्रश्न 1

1) फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी की तुलना में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थिति बेहतर कैसे थी ? दस पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) निम्नलिखित वक्तव्यों को पढ़कर सही (√) और गलत (×) का निशान लगाइए :

i) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना 1664 ई. में हुई थी।

ii) प्रथम फ्रांसीसी कारखाना सूरत में स्थापित हुआ था।

iii) 18वीं शताब्दी के प्रथम दशक में फ्रांसीसी कंपनी की अवनति हुई।

iv) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी का तंबाकू के व्यापार पर एकाधिकार था।

v) फ्रांसीसी अंग्रेज़ों की तुलना में सामान सस्ते में खरीदते थे और महंगा बेचते थे।

vi) प्रथम कर्नाटक युद्ध में पहले आक्रमण अंग्रेज़ों ने किया।

vii) पांडिचेरी के दक्षिण में स्थित सेंट डेविड फोर्ट छोटा फ्रांसीसी अड्डा था।

3) कर्नाटक युद्ध में कर्नाटक के प्रथम नवाब के भाग लेने के महत्व का उल्लेख कीजिए। उत्तर पांच पंक्तियों में दीजिए।

....

....

....

....

....

9.4 द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1751-55)

प्रथम कर्नाटक युद्ध के विपरीत, द्वितीय कर्नाटक युद्ध में यूरोपीय युद्ध की कोई भूमिका नहीं थी। इसके लिए भारतीय परिस्थितियां ही उत्तरदायी थीं। भारत में अंग्रेज़ों और फ्रांसीसियों के हितों को लेकर ही यह युद्ध हुआ। यह युद्ध भारत में फ्रांसीसी और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के जीवन-मरण से सम्बद्ध था।

9.4.1 कर्नाटक और हैदराबाद में गद्दी के लिए संघर्ष

कर्नाटक प्रांत हैदराबाद के निजाम के अधीन था, जो दक्कन का सूबेदार था। कर्नाटक पर गवर्नर या नवाब का शासन था। इस प्रांत की राजधानी आरकोट थी। दक्कन का सूबेदार इस समय अपनी समस्याओं से घिरा था। उसे एक तरफ मराठों का सामना करना पड़ रहा था, दूसरी तरफ उत्तरी भारत की शक्तियों को भी संभालना पड़ रहा था। अतः नवाब लगभग स्वतंत्र रूप से शासन कर रहा था।

प्रथम कर्नाटक युद्ध के पहले 1740 में मराठों ने कर्नाटक पर हमला किया और इसके नवाब दोस्त अली को मार डाला। वे उसके दामाद चंदा साहब को बंदी बनाकर सतारा ले गए। इस स्थिति को संभालने के लिए 1743 में निजाम कर्नाटक आया और अपने विश्वस्त अधिकारी अनवरउद्दीन खां को कर्नाटक का नवाब बनाया। इस नियुक्ति से स्थिति और बिगड़ गई। सात वर्ष मराठों की कैद में रहने के बाद 1748 ई. में चंदा साहब मुक्त हुआ। इसी वर्ष अर्थात् 1748 ई. में हैदराबाद के नवाब आसफ-जन-निजाम उल मुल्क का देहांत हो गया। उसके बाद उसके बेटे नासिर जंग ने गद्दी संभाली। परन्तु उसके पोते मुजफ्फर जंग ने उसके उत्तराधिकार को यह कहकर चुनौती दी कि मुगल बादशाह ने उसे कर्नाटक का गवर्नर नियुक्त किया है। मुजफ्फर जंग और चंदा साहब ने मिलकर क्रमशः हैदराबाद और कर्नाटक की गद्दी हासिल करने के लिए संघर्ष करने की योजना बनाई।

9.4.2 डुप्ले का हस्तक्षेप

विदेशी व्यापारिक कंपनियों को अपना हित साधने का यह सुनहरा मौका हाथ लगा। डुप्ले ने चंदा साहब और मुजफ्फर जंग के साथ गुप्त संधियां कीं और उन्हें कर्नाटक तथा दक्कन की गद्दी दिलाने का वचन दिया।

अगस्त 1749 में इन तीनों ने मिलकर वेल्लुर के दक्षिण पूर्व में अंबर के युद्ध में अनवरउद्दीन को मार डाला। उसका पुत्र मोहम्मद अली भाग कर त्रिचुनापल्ली चला गया, फ्रांसीसी सेना ने त्रिचुनापल्ली तक उसका पीछा किया। चंदा साहब को कर्नाटक का नवाब बनाया गया।

9.4.3 अंग्रेज़ों का प्रवेश

अंग्रेज़ों ने महसूस किया कि मामला उनके हाथ से निकलता जा रहा है। उन्होंने हैदराबाद के निजाम नासिर जंग से दोस्ती कायम की और उससे कर्नाटक में स्थित अपने दुश्मनों का सफाया करने तथा त्रिचुनापल्ली में मोहम्मद अली को सहायता भेजने का अनुरोध किया। परन्तु अपने दुश्मनों को दबाने के क्रम में 1750 में नासिर जंग की मृत्यु हो गई। मुजफ्फर जंग को कैद से मुक्त किया गया और उसे दक्कन का सूबेदार बना दिया गया।

इस सहायता के एवज में नए सूबेदार ने फ्रांसीसियों को कई तोहफे दिए। डुप्ले को कृष्णा नदी के दक्षिण में मुगल राज्य का गवर्नर नियुक्त किया गया। पांडिचेरी के आसपास के इलाके और उड़ीसा तट के कुछ इलाके, खासकर मशहूर व्यापारिक केंद्र और शहर मसुलिपट्टम फ्रांसीसियों को दे दिए गए। इसके बदले में मुजफ्फर जंग के निवेदन पर डुप्ले ने अपने श्रेष्ठ अधिकारी बूसी के नेतृत्व में फ्रांसीसी सेना नवाब को सौंप दी। डुप्ले जानता था कि हैदराबाद के दरबार में दबदबा बनाए रखने का यह सरल तरीका है और इस प्रकार वह संपूर्ण दक्कन पर अपना प्रभाव जमा सकता है।

ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मद्रास पर अंग्रेज़ों का प्रभुत्व समाप्त हो जाएगा। परन्तु सितम्बर, 1750 में सौउंडर्स नामक एक कुशल व्यक्ति के मद्रास के गवर्नर बनने के बाद स्थिति में परिवर्तन आया। उसने 1751 में मोहम्मद अली की सहायता करने का निश्चय किया। इसी समय फ्रांसीसियों ने महसूस किया कि त्रिचनापल्ली पर कब्जा किए रहने का कोई फायदा नहीं है। इस ध्येय से उन्होंने अपनी नीति बदल दी और मोहम्मद अली की खुशामद में लग गए। मोहम्मद

अली कोई निर्णय लेने की स्थिति में नहीं था। वह कर्नाटक के नवाब की गद्दी छोड़ने को भी तैयार था। वह केवल यह चाहता था की फ्रांसीसी हैदराबाद के निजाम से कहकर उसे दक्कन के किसी दूसरे भाग की नवाबी दिला दें। लेकिन अंग्रेज़ बेहतर कूटनीतिज्ञ साबित हुए। उन्होंने मोहम्मद अली से कहा कि वह अपना दावा न छोड़े, केवल किसी तरह मुद्दे को टालता रहे। इसके अलावा, उसे यह भी सलाह दी गई कि वह फ्रांसीसियों से संधि का ढोंग रचाता रहे ताकि उन्हें ठीक से मूर्ख बनाया जा सके। युद्ध के लिए पूरी तरह तैयार होने के बाद अंग्रेज़ों ने मई 1751 में सेना की एक टुकड़ी त्रिचनापल्ली भेजी। यह टुकड़ी फ्रांसीसियों से मोहम्मद अली की रक्षा के ख्याल से भेजी गई थी। बाद में इसी वर्ष मैसूर और तंजौर के शासकों तथा मराठा सरदार मोरारी राव ने मोहम्मद अली और अंग्रेजों को सहायता देने का वचन दिया। त्रिचनापल्ली को बचाने के लिए, इसी समय क्लाइव ने आर्कोट पर आक्रमण करने की योजना बनाई। चंदा साहब को अपनी राजधानी बचाने के लिए अधिकांश सेना इधर लगानी पड़ी। क्लाइव ने छोटी-सी ब्रिटिश सेना (इसमें 200 यूरोपीय और 300 भारतीय सैनिक थे) की सहायता से आर्कोट पर सफलतापूर्वक कब्जा कर लिया। नवाब को त्रिचनापल्ली से अतिरिक्त सेना भेजनी पड़ी और 53 दिनों के युद्ध के बाद वह आर्कोट को वापस जीतने में सफल हुआ। आर्कोट हाथ से निकल जाने से फ्रांसीसियों को बेहद निराशा हुई और इसके फलस्वरूप त्रिचनापल्ली स्थित फ्रांसीसी जनरल जैक्वेर फ्राक्वाइस लॉ ने अपना पद त्याग दिया और श्रीरंगम भाग गया। अंग्रेज़ों ने उसका पीछा किया और लॉ ने अंततः 9 जून, 1752 को आत्म-समर्पण कर दिया। इसके बाद, जल्द ही हताश चंदा साहब ने अंग्रेज़ों के समक्ष आत्म-समर्पण कर दिया। तंजौर के सेनानायकों के आदेश पर उसका सिर कलम कर दिया।

इस घटना से अंग्रेज़ों की स्थिति मज़बूत हुई और फ्रांसीसियों को अपमानजनक पराजय का सामना करना पड़ा। परन्तु वे इतनी आसानी से हार मानने वाले नहीं थे और डुप्ले नई रणनीति तैयार कर रहा था। उसने मराठा सरदार मुरारी राव और मैसूर के शासक को अपनी ओर मिला लिया तथा तंजौर के राजा से निष्पक्ष रहने का वचन ले लिया। दिसम्बर, 1752 में त्रिचुनापल्ली पर उनका कब्ज़ा फिर से स्थापित हुआ और यह स्थिति एक साल से अधिक समय तक बनी रही। इस प्रकार, दोनों पक्षों को एक-एक बार सफलता मिली।

9.4.4 डुप्ले की वापसी

भारत में फ्रांसीसी स्थिति मज़बूत करने के डुप्ले के साहसी प्रयासों को फ्रांसीसी सरकार ने बहुत नहीं सराहा। डुप्ले की नीति से होने वाले वित्तीय घाटे से फ्रांसीसी अधिकारी नाराज़ थे और उन्होंने उसे वापस बुलाने का निश्चय किया। पहली अगस्त 1754 को डुप्ले के स्थान पर गोडेह्यू भारत का नया गवर्नर जनरल बना। डुप्ले नीति के बिल्कुल विपरीत उसने अंग्रेज़ों के साथ समझौते की नीति अपनाई और एक संधि की। अंग्रेज़ों और फ्रांसीसियों ने देशी राजाओं के आपसी झगड़े में हाथ न डालने का वादा किया। यह भी तय किया गया कि उस समय (संधि के कारण) जिस क्षेत्र पर जिसका वास्तविक अधिकार है, उसका अधिकार बना रहेगा।

अब सवाल यह उठता है कि सारा माहौल डुप्ले के खिलाफ कैसे हो गया? भारत में डुप्ले की नीति से उत्पन्न अप्रसन्नता सम्पूर्ण कारण का एक छोटा-सा हिस्सा है। आपको याद रखना चाहिए कि फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कम्पनी सीधे फ्रांसीसी सरकार के नियंत्रण में थी, जिसे समूचे राजनीतिक परिदृश्य को देखकर चलना पड़ता था। भारत में होने वाली मुठभेड़ से अमेरिका में उनकी स्थिति पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता था। इसी कारण, फ्रांसीसियों ने भारत में अंग्रेज़ों से संघर्ष की नीति छोड़ दी।

जब अंग्रेज़ों को यह महसूस हुआ कि डुप्ले को वापस बुलाया जा रहा है और उनकी स्थिति मज़बूत है तो उन्होंने अपनी स्थिति और दृढ़ करनी चाही। समझौते के दौरान भी उन्होंने डुप्ले के खिलाफ फैली आग को हवा दी और बार-बार इस बात पर बल दिया कि डुप्ले की महत्वाकांक्षा के कारण कोई भी समझौता विफल हो सकता है। उन्होंने बार-बार डुप्ले की जगह दूसरे किसी व्यक्ति को नियुक्त करने की बात की। इस प्रकार, अंग्रेजों ने भी डुप्ले के पतन में भूमिका अदा की। डुप्ले के पतन से अंग्रेज़ों को काफी लाभ हुआ और फ्रांसीसियों पर उनका वर्चस्व कायम हुआ।

9.4.5 फ्रांसीसी प्रभाव हैदराबाद तक सीमित

डुप्ले का कार्य अधिकांश मामलों में फलीभूत नहीं हुआ। परन्तु हैदराबाद में उसकी नीति सफल रही। वहां बुसी ने स्थानीय सरदारों के विरोध के बावजूद अपना प्रभाव जमा रखा था। अधिकतर स्थानीय सरदारों का झुकाव अंग्रेज़ों की तरफ था। यहां तक कि बुसी ने नवाब को प्रभावित कर उत्तरी सरकार के मुस्तफा नगर, एल्लौर, राजमुंदरी और चिकाकौल ज़िले हस्तगत कर लिए थे। इन ज़िलों का सालाना राजस्व तीस लाख रुपए से ज्यादा था। इन पैसों से हैदराबाद स्थित फ्रांसीसी सेना की देख-रेख की जानी थी। कुछ समय के लिए ही सही, परन्तु हैदराबाद में बुसी की स्थिति मज़बूत थी। स्थानीय सरदारों के जोरदार विरोध के बावजूद वह निजाम के राज्य क्षेत्र में फ्रांसीसी सेना रखने में कामयाब रहा (हालांकि 1756 में, थोड़े समय के लिए, स्थानीय सरदार फ्रांसीसी सेना को हटवाने में सफल हो गए थे)।

इस बात में कोई संदेह नहीं है कि द्वितीय कर्नाटक युद्ध में डुप्ले की रणनीति और कूटनीति के कारण भारत में फ्रांसीसी प्रतिष्ठा बढ़ी। यह विडंबना ही थी कि अपने वाणिज्यिक हितों के लिए फ्रांसीसी सरकार ने डुप्ले को अपमानजनक ढंग से वापस बुला लिया और उसकी नीतियों को बिल्कुल उलट दिया। डुप्ले को कमज़ोर और अयोग्य फ्रांसीसी सेनानायकों के साथ काम करना पड़ा था। एक तरफ डुप्ले के साथ लॉ जैसे अधिकारी थे, जो अपनी मनमानी करते थे, उसके सहकर्मियों में इच्छा शक्ति का अभाव था, वे कायर थे; दूसरी तरफ अंग्रेज़ों के साथ क्लाइव जैसा सेनानायक था, जो प्रतिभा-सम्पन्न और साहसी था।

बोध प्रश्न 2

1) निम्नलिखित का सही मिलान कीजिए :

i)	क. चंदा साहब	क. हैदराबाद
ii)	ख. मुजफ्फर जंग	ख. मद्रास
iii)	ग. मोहम्मद अली	ग. कर्नाटक
iv)	घ. सौउंडर्स	घ. त्रिचनापल्ली

2) द्वितीय कर्नाटक युद्ध में फ्रांसीसियों की तुलना में अंग्रेज़ों की स्थिति कैसे बेहतर हो गई? 100 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

9.5 तृतीय कर्नाटक युद्ध (1758-63)

क्लाइव की कूटनीतिक चालों से अंग्रेज़ों का भविष्य सुधरने लगा और इसके नतीजे सामने आने लगे। 1750 का दशक इस दृष्टि से अंग्रेज़ों के लिए उत्कर्ष का काल था, जब उन्होंने बंगाल पर प्रभुत्व स्थापित कर लिया। उधर 1756 ई. में यूरोप में फ्रांसीसियों के बीच युद्ध छिड़ा और इधर अंग्रेज़ों ने चंदरनगर पर कब्जा जमा लिया। यह मात्र एक संयोग नहीं था। बंगाल का नवाब सिराजुद्दौला कंपनी की इस कार्रवाई से सख्त नाराज़ हुआ। उसने पहले से ही चेतावनी दे रखी थी कि किसी भी यूरोपीय शक्ति की ऐसी हरकतों को वह बर्दाश्त नहीं करेगा। चंदरनगर पर अंग्रेज़ों का कब्जा हो जाने के बाद नवाब ने साहसपूर्वक फ्रांसीसी शरणार्थियों को अपने दरबार में शरण दी और उन्हें निकाल बाहर करने से इन्कार कर दिया। यहां तक कि अंग्रेज़ों ने भावी मुगल उत्तराधिकारी द्वारा बंगाल पर आक्रमण की स्थिति में सहायता देने का भी वचन दिया, परन्तु नवाब टस से मस नहीं हुआ। नवाब द्वारा फ्रांसीसियों को न सौंपा जाना अंग्रेज़ों और नवाब के बीच युद्ध का एक कारण बना।

दक्षिण भारत में अंग्रेज़ और फ्रांसीसी दोनों ही युद्ध करने की मनःस्थिति में नहीं थे। दोनों के पास साधनों की कमी थी। मद्रास की थल और जल, दोनों ही सेनाएं बंगाल के नवाब के कब्जे से कलकत्ता को मुक्त कराने में व्यस्त थीं। फ्रांसीसी सरकार ने इस बार अंग्रेज़ों को गंभीर रूप से आहत करने की योजना बनाई थी और इसके लिए पूरी तैयारी की थी। काउंट डे लैली के नेतृत्व में एक सक्षम फ्रांसीसी सेना भारत के लिए रवाना की गई, परन्तु रास्ते में इसे कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अतः 1758 के पहले छह महीने तक फ्रांसीसी सेना भारत नहीं पहुंच सकी। दक्षिण भारत में अपने हितों की रक्षा करने के लिए जब तक फ्रांसीसी सेना पहुंची, तब तक अंग्रेज़ी बेड़ा बंगाल से विजयी होकर वापस आ चुका था और फ्रांसीसियों का मुकाबला करने को तैयार था। वे अपने साथ काफी मात्रा में धन और बाहुबल साथ लेकर आए थे।

9.5.1 कर्नाटक में फ्रांसीसी आक्रमण

इस प्रकार तृतीय कर्नाटक युद्ध की पूरी तैयार हो गई। इस बार फ्रांसीसियों ने पहले आक्रमण किया। तेज गति से आक्रमण कर उन्होंने सेंट डेविड किले पर कब्जा कर लिया। यह 2 जून 1758 की घटना है। इसी समय, हैदराबाद से बुसी उत्तरी भाग में स्थित अंग्रेज़ों के इलाकों पर आक्रमण कर रहा था। उसने इन सभी इलाकों पर अधिकार करने के साथ-साथ 24 जून 1758 को विजय नगरम के किले पर भी कब्जा जमा लिया।

इस अप्रत्याशित आक्रमण और धक्के से अंग्रेज़ स्वाभाविक रूप से चिंतित हो गए। उन्हें लगा कि कहीं भारत से उनका अस्तित्व ही न समाप्त हो जाए। जेम्स मिल के अनुसार, "अगर दुश्मन के पास डुप्ले का नेतृत्व और संचालन होता तो इस बात की पूरी संभावना थी कि उनका अनुमान यथार्थ में परिवर्तित हो जाता"।

9.5.2 फ्रांसीसी सेना की समस्याएं

परन्तु फ्रांसीसी अपने इस अभियान को जारी नहीं रख सके। उन्हें अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा। पहली समस्या वित्त से संबंधित थी। कंपनी के पास वित्त की कमी थी और उसे प्रत्येक सैनिक कार्रवाई के लिए अर्थ जुटाने में मुश्किल का सामना करना पड़ता था। सेना को वेतन देने के लिए अर्थ का अभाव था। इसके अतिरिक्त, सेना के जवानों के प्रति फ्रांसीसी सेनानायकों का व्यवहार कठोर और शुष्क था। वे उनके परामर्श को नज़रअंदाज कर उन्हें अलग-थलग कर देते थे। लैली ने मद्रास को ध्वस्त कर कर्नाटक में ब्रिटिश शक्ति के आधार पर चोट करने की सही योजना बनाई, परन्तु नौसेना के असहयोग के कारण उसे असफलता मिली। फ्रांसीसी नौसेना की कमान एडमिरल डी एके के हाथ में थी जो अप्रैल 1758 में अंग्रेज़ों के हाथ पराजित हो चुका था। उसने मद्रास जाने के प्रस्ताव को ठुकरा दिया। परिणामस्वरूप लैली को मद्रास पर कब्जा करने की अपनी योजना स्थगित करनी पड़ी। इस प्रकार, उसने एक बहुमूल्य अवसर गंवा दिया; भविष्य में फिर ऐसा मौका न मिल सका।

लैली ने सोचा था कि वह तंजौर के राजा से 70 लाख रुपए लेने में सफल हो जाएगा और इस प्रकार वह कंपनी की वित्तीय समस्या हल कर सकेगा। यह राशि डुप्ले के समय से ही बकाया थी। 18 जुलाई 1758 को तंजौर पर कब्जा कर लिया गया। हालांकि राजा प्रतिरोध करने की स्थिति में बिल्कुल नहीं था, फिर भी फ्रांसीसी इसका कोई फायदा नहीं उठा सके। फ्रांसीसी सेना की अंदरूनी समस्याएं पुनः मुखर हो उठीं। उनके पास गोले-बारूद की कमी थी, लैली और उसके जवानों के बीच परस्पर विश्वास का अभाव था, फ्रांसीसी सेना बुरी तरह हतोत्साहित थी।

9.5.3 नौसेना पराजय

इसी के साथ-साथ अगस्त 1758 में अंग्रेज़ी बेड़े ने फ्रांसीसी बेड़े को भारी हानि पहुंचाई। हतोत्साहित डी एके ने फ्रांसीसी नौसेना के प्रयत्नों को गहरा धक्का पहुंचाया और उसने उसी महीने हिंद महासागर के इलाके को छोड़ दिया। इस कारण से लैली तंजौर छोड़ने को मजबूर हो गया। इससे लैली और फ्रांस की प्रतिष्ठा को गहरा धक्का लगा।

इसके बावजूद, लैली ने लगातार कोरोमंडल तट पर स्थित अंग्रेज़ों के अड्डे पर अधिकार जमाने का प्रयत्न किया और एक स्थिति ऐसी भी आ गई जब अंग्रेज़ों के पास कर्नाटक में केवल मद्रास, त्रिचनापल्ली और चिंगलपेट रह गया। 1758 तक मानसून के आगमन के कारण अंग्रेज़ी बेड़े को मद्रास छोड़ना पड़ा और लैली को मद्रास पर कब्जा जमाने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ। परन्तु फ्रांसीसी सेना की समस्याएं ठीक से सुलझाई न जा सकीं और मद्रास पर तीन महीनों तक ही कब्जा जमाकर रखा जा सका 1 फरवरी 1759 में अंग्रेज़ी बेड़ा लौट आया और फ्रांसीसी सेना को पीछे हटना पड़ा।

इसके बाद भारत में फ्रांस का सितारा गर्दिश में डूबने लगा और फिर इसे उबारा न जा सका। अगले बारह महीनों में यह विनाशपूर्ण हो गया। दक्कन में गलत निर्णय और अनुमान उन पर भारी पड़े। लैली ने बुसी को हैदराबाद छोड़ने का आदेश दिया। यह उसका गलत निर्णय था। वहां फ्रांसीसी सेना अयोग्य सेनानायकों के नेतृत्व में रह गई। बुसी ने हैदराबाद लौटने के लिए बार-बार आग्रह किया, परन्तु उसकी एक न चली। इस स्थिति का जायजा लेते हुए अंग्रेज़ों ने बंगाल से अपनी सेना उत्तरी सरकार की ओर भेजी। उन्होंने राजमुंदरी और मसुलिपट्टम पर अधिकार जमा लिया और निजाम सलाबत जंग के साथ संधि की। इस प्रकार, दक्कन में फ्रांसीसी प्रभाव का खात्मा हो गया। फ्रांसीसियों के लिहाज से यह और खराब बात हुई कि हैदराबाद के दरबार में फ्रांसीसियों की जगह अंग्रेज़ों का दबदबा कायम हो गया।

9.5.4 वांडीवाश का युद्ध

तृतीय कर्नाटक युद्ध की निर्णायक लड़ाई वांडीवाश में 22 जनवरी 1760 को लड़ी गई। जनरल आयर कूट की सेना ने लैली के नेतृत्व वाली फ्रांसीसी सेना को पूरी तरह ध्वसत कर दिया। अगले तीन महीनों में कूट ने कर्नाटक में स्थित फ्रांस के सभी अधिकार क्षेत्रों पर प्रभुत्व जमा लिया। फ्रांसीसियों के पास जिंजे और पांडिचेरी को छोड़कर और कोई क्षेत्र कर्नाटक में न बचा। अंततः 10 मई 1760 में अंग्रेज़ों ने पांडिचेरी पर भी घेरा डाल दिया।

इस कठिन परिस्थिति में लैली ने मैसूर के नवाब हैदरअली के साथ संधि करके अपनी हालत पुनः सुधारनी चाही। हैदर अली ने फ्रांसीसियों की सहायता के लिए सेना भी भेजी। परन्तु युद्धनीति के संबंध में फ्रांसीसी सेना और हैदरअली की सेना के बीच समझौता न हो सका और हैदरअली की सेना बिना एक भी युद्ध लड़े मैसूर वापस लौट आई।

छह महीने की घेराबंदी के बाद अंततः 16 जनवरी 1761 को फ्रांसीसी राजधानी पांडिचेरी ने हथियार डाल दिए। विजयी सेना ने शहर को पूरी तरह बरबाद कर दिया और इसकी किलेबंदी को ध्वस्त कर दिया। एक समकालीन विवरण में लिखा है कि "एक समय फले-फूले और भरे-पूरे इस शहर में एक भी छत सही सलामत नहीं रह गई।" इसके तुरंत बाद मालाबार तट पर स्थित फ्रांसीसी अड्डे जिंजे और माहे भी उनके हाथ से निकल गए। अब भारत में उनके लिए पांव रखने की भी जगह नहीं बची थी।

फ्रांसीसी जनरल काउंट डे डैली की हालत और भी दुर्भाग्यपूर्ण रही। वह दो साल तक अंग्रेज़ों का बंदी रहा और उसे सप्तवर्षीय युद्ध की समाप्ति के बाद ही छोड़ा गया। फ्रांस में भी उसका सम्मान नहीं हुआ, बल्कि उसे दो साल तक हैदराबाद में बंदी बना कर रखा गया और उसके बाद उसे मृत्यु दंड दे दिया गया।

पेरिस की संधि के बाद भारत में स्थित फ्रांसीसी कारखाने फ्रांसीसी कंपनी को सौंप दिए गए। परन्तु 1769 में फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी को औपचारिक रूप से समाप्त कर दिया गया। इसके बाद, फ्रांसीसी सरकार ने निजी व्यापारियों के लाभ के लिए कारखानों को अपने नियंत्रण में ले लिया। यह फ्रांसीसियों का एक कमजोर प्रयास था और भारत में अपने पुर्तगाली तथा डच सहकर्मियों के समान उन्होंने अपने को "देशी व्यापार" तक ही सीमित रखा। यूरोप और भारत, दोनों जगहों पर फ्रांसीसी व्यापारी अंग्रेज़ व्यापारियों पर पूरी तरह निर्भर हो गए। अपने व्यापारिक मामलों में या तो वे प्रत्यक्ष रूप में ब्रिटिश कम्पनी पर आधारित थे या भारत में स्थित इसके अधिकारियों की सहायता लेते थे। इसके अतिरिक्त, वे भारत में रह रहे निजी अंग्रेज़ व्यापारियों की भी सहायता लेते थे।

9.6 फ्रांसीसी असफलता के कारण

सवाल यह उठता है कि भारत में फ्रांसीसी असफलता के क्या कारण थे? क्या फ्रांसीसी सरकार द्वारा डुप्ले को वापस बुलाना एक भूल थी? संभवतः भारत से डुप्ले की वापसी के बाद ही भारत में फ्रांसीसियों का पतन आरंभ हुआ या फ्रांसीसी नौसेना का कमजोर होना प्रमुख कारण था। वस्तुतः फ्रांसीसियों के पास स्थाई नौसेना नहीं थी, जबकि अंग्रेज़ों के पास एक मज़बूत और स्थाई नौसेना थी। जब मॉरिशश से फ्रांसीसी नौसेना भारत में अपने सहकर्मियों की सहायता के लिए आई तो उसने समस्याएं ही पैदा कीं।

इसके अलावा, कुछ अन्य कारण भी थे जिसके कारण अंग्रेज़ों की स्थिति मज़बूत हो गई। इसमें अंग्रेज़ों का बंगाल पर अधिकार होना प्रमुख कारण था। इससे उन्हें एक आधार प्राप्त हुआ, जहां से वे लगातार रकम और आदमी मद्रास भेज सकते थे और इधर-उधर आक्रमण कर फ्रांसीसियों का ध्यान बंटा सकते थे। ऐसा उन्होंने उत्तरी सरकार पर आक्रमण करके किया।

9.7 बाद की स्थिति

तृतीय कर्नाटक युद्ध के बाद भारत में अंग्रेज़ों का वर्चस्व कायम हो गया। उनके यूरोपीय प्रतिद्वंद्वी समाप्त हो गए, अब उन्हें केवल भारतीय राजाओं को कुचलना था। दक्षिण भारत में मैसूर राज्य और मराठे अंग्रेज़ों की राह के सबसे बड़े रोड़े थे। अठारहवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में ईस्ट इंडिया कंपनी का मुख्य सरदर्द यही दोनों शक्तियां थीं और इस समय उन्हें इन शक्तियों से लड़ाई करने में अपना ज्यादा समय लगाना पड़ा। परन्तु उन्नीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक तक दक्षिण भारत में उन्होंने अपनी स्थिति अपेक्षाकृत मज़बूत कर ली। अब उनका अगला कदम भारत की सीमाओं की किलेबंदी करना था, खासकर उत्तरी-पश्चिमी सीमांत पर उन्हें कड़ा पहरा बैठाना था, जिधर से रूस के आक्रमण का खतरा था।
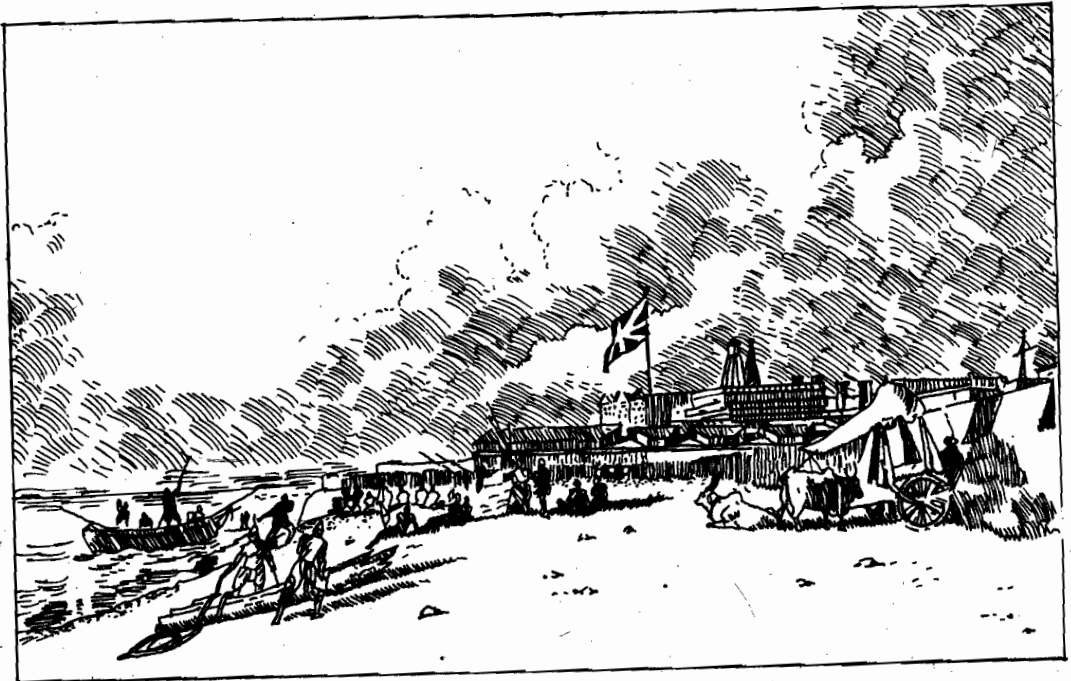
3 सेंट फोर्ट के किले का दृश्य

बोध प्रश्न 3

1) निम्नलिखित वक्तव्यों को पढ़िए और सही (√) तथा गलत (×) का निशान लगाइए:

   i) तृतीय कर्नाटक युद्ध की शुरुआत अंग्रेज़ों द्वारा पांडिचेरी पर कब्जा जमाने के साथ हुई।

   ii) तृतीय कर्नाटक युद्ध में फ्रांसीसी नौसेना का नेतृत्व एडमिरल डी आर्क ने किया।

   iii) इस युद्ध में अंग्रेज़ों ने तंजौर पर आक्रमण किया।

   iv) इस युद्ध के अंत में फ्रांसीसियों ने हैदराबाद पर अपना प्रभाव बनाए रखा।

2) तृतीय कर्नाटक युद्ध में फ्रांसीसी असफलता के कारणों का उल्लेख कीजिए। पांच पक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

9.8 सारांश

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप जान गए होंगे कि आंग्लफ्रांसीसी संघर्ष के परिणामस्वरूप तीन कर्नाटक युद्ध हुए। अठारहवीं शताब्दी के दौरान दक्षिण भारत में ये युद्ध ब्रिटिश विजय के इतिहास के प्रमुख चरण थे। अपना वर्चस्व कायम करने के लिए ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए फ्रांसीसियों को निकाल बाहर करना जरूरी था। यूरोप में छिड़े लगातार दो युद्धों से आंग्ल-फ्रांसीसी संघर्ष की पृष्ठभूमि तैयार हो गई थी। हैदराबाद और कर्नाटक में फैली अव्यवस्था के कारण दोनों विदेशी कम्पनियों को भारतीय राजाओं के अंदरूनी मामलों में हस्तक्षेप करने का मौका मिला और इस क्रम में ये विदेशी कम्पनियां एक-दूसरे से उलझ पड़ीं। इस संघर्ष में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की जीत हुई। इसका कारण स्पष्ट है। उनके पास भारत में मज़बूत नौसेना थी, अच्छी सेना और कुशल नेतृत्व था, उन्हें इंग्लैंड की सरकार का भी बढ़िया समर्थन प्राप्त था और बंगाल पर अधिकार होने के कारण उनके पास साधनों की कमी भी नहीं थी। कर्नाटक के इन युद्धों के कारण भारतीय शक्तियों की कमजोरियां उभर कर सामने आईं। वे नौसेना के क्षेत्र में विदेशी शक्तियों को चुनौती नहीं दे सकते थे, उनकी बड़ी सेना विदेशियों की छोटी सेना के सामने भी लाचार थी। इससे अठारहवीं शताब्दी के राजनीतिक इतिहास पर गहरा प्रभाव पड़ा।

9.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 9.2 देखिए।

2) उपभाग 9.3.1 देखिए।

3) i) × ii) √ iii) √ iv) × v) × vi) √ vii) √

बोध प्रश्न 2

1) i) क - ग ii) ख - घ iii) ग - क iv) घ - ख

2) उपभाग 9.4.3 देखिए।

बोध प्रश्न 3

1) i) × ii) √ iii) √ iv) ×

2) इस प्रश्न का उत्तर देते समय अंग्रेज़ों के स्थाई नौसैनिक अड्डे और वित्तीय साधनों का उल्लेख करें। भाग 9.6 देखिए।